चलो तुम ! मेरे समय में एक बार

डॉ. राजकुमारी दास

असिस्टेंट प्रोफेसर

हिन्दी विभाग

बी.एच. कॉलेज

हाउली,बरपेटा

असम

चलो न एक बार

फिर से जी ले

जो था मौलिक, साधारण..

अपने आप को

फेसबुक, व्हाट्सऐप

की दुनिया से निकाल ले

मुन्ना मुन्नी ने तो नहीं खेला

चोर पुलिस गुल्ली डंडा..

न ही छुट्टियों में नाना-नानी , दादा-दादी के घर डाला डेरा

जो हे जैसा हैं, उसे वैसा ही स्वीकारना पड़ेगा

लेकिन उन यादों को, अनुभवों को

शब्दों में संभालना पड़ेगा

अपना तुम पर ठोपना नहीं चाहती

लेकिन चाहती हूं

तुम भी प्रकृति के गोद को महसुस करो

लेकिन मैं नहीं निकाल सकती

तुम को पॉकमॉन,माइनक्राफ्त,रिलस्,फेसबुक व्हाट्स ऐप से

जो आनन्द तुमको इन सब में आता हैं
शायद वही हैं

जो मुझे चोर पुलिस या गुल्ली डंडा में आता था .....।

जीवन

लिखना जरूरी हैं

क्योंकि सुनने वाला कोई नही

शायद पढ़ाने वाला हो

ऊंची इमारत की आलिशान

कमरे में समय निकालना

क्या यही वह सपना था

बचपन में जिसके पीछे पीछे भागा था

समाज ने जो तैय किया

सफलता की परिभाषा

हासिल उस को किया

समाज की आखों से मैं सफल

लेकिन .....

फिर भी.....

पता नहीं.....

क्यु.....

कुछ.....

अधूरा - सा लगता है।

सही है सब माया है, तृष्णा है

मिल जाए या मिट जाए

नया प्यास फिर से तड़पाने लगता ।